© 2018 IJSRST | Volume 4 | Issue 2 | Print ISSN: 2395-6011 | Online ISSN: 2395-602X
Themed Section: Science and Technology

समाजीकरण के उन्नयन में वैदिक देवताओं की उपादेयता

कन्हैया लाल यादव
(एस.आर.एफ.)
शोधच्छात्र, संस्कृत–विभाग
इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद

वेद 'शब्द' ज्ञानार्थक 'विद्' धातु स 'घञ्' प्रत्यय के योग से बना है। जिसका सामान्य अर्थ 'ज्ञान' है जिसमें ज्ञान का विषय, महत्ता तथा ज्ञेयादि समवेत रूप से समाहित हैं। जिसके विषय में मीमांसक शबर स्वामी का कथन है कि –''वेदों की अपूर्व अथवा असाधारण सामर्थ्य यह है कि उनसे भूत, वर्तमान और भविष्य में घटने वाले अर्थ ही नहीं अपितु सूक्ष्म, व्यवहित तथा अन्य अर्थ भी ज्ञात होते हैं। ऐसी दिव्यता और शक्ति का असाधारणत्व अन्यत्र कहीं भी उपलब्ध नहीं है।[1] आचार्य सायण ने वेदों को दुर्गम विषयों का परिज्ञान कराने वाले, अकुण्ठित सामर्थ्य से संभरित, इतर वस्तु प्रतिपादकत्व–शक्ति तथा स्वप्रतिपादकत्व–शक्ति से युक्त बताया है[2] अर्थात् जिस प्रकार से अन्धेरे में किसी वस्तु के रूप को जानने के लिये अथवा उसका अवलोकन करने के लिये प्रकाश की अपेक्षा होती है, जब सूर्य का प्रकाश होता है, तब दीपक आदि किसी अन्य प्रकाश की आवश्यकता नहीं होती है। ठीक उसी प्रकार धर्म–अधर्म के सम्बन्ध में जानने के लिये वेद स्वतः प्रमाण है, वहाँ किसी अन्य की अपेक्षा नहीं है। जैसा कि मनुस्मृति में भी कहा गया है कि– धार्यमाण भक्ति, ज्ञान आदि धर्म की जिज्ञासा रखने वालों के लिये मुख्य–स्वतः प्रमाण एकमात्र श्रुति ही है।[3] महर्षि वेदव्यास ने भी महाभारत में वेदों की प्रामाणिकता के विषय में कहते हैं कि–'वेदों के ज्ञाता सर्वज्ञ है अथवा नहीं है, उस साध्य–साधनादि समस्त वर्णनीय अर्थों की निष्ठा वेदों में है।[4] अतः वेदों को एकाङ्गी विषय का प्रकाशक मान लेना उचित नहीं प्रतीत होता अपितु वेदों में एक ओर स्तुति प्राकृतिक संचेतना आदि का वर्णन प्राप्त होता है तो दूसरी ओर सामाजीकरण में अन्तर्निहित तत्त्वों स्वार्थ, लोभ, घृणा, कट्टरता, हठवादिता के उन्मूलकता के साथ ही प्रेम, एकता, सेवा, कर्तव्यनिष्ठा, समर्पण के प्रतिपादक तत्वों का जो अवलोकन हमें होता है वह सामाजीकरण के विकास में सहायक ही हैं, क्योंकि सामाजीकरण वह प्रक्रिया है जिसके माध्यम से मनुष्य के विभिन्न व्यवहार, रीति–रिवाज, गतिविधियाँ इतयादि सीखता है। जैविक अस्तित्व में सामाजिक अस्तित्व में मनुष्य का रूपान्तरण

---

1 चोदना हि भूतं भवन्तं भविष्यन्तं सूक्ष्मं व्यवहितं विप्रकृष्टमित्येवं जातीय–कमर्थं शक्रोत्यवगमयितुम्।

2 यथा घटपटादिद्रव्याणां स्वप्रकाशत्वाभावेऽपि सूय्र चन्द्रादीनां स्वप्रकाशत्वमविरूद्धं तथा मनुष्यादीनां स्वस्कन्धधिरोहासम्भवेऽपि अकुण्ठितशक्तेर्वेदस्य इतरवस्तु प्रतिपादकत्ववत् स्वप्रतिपादकत्वमप्यस्ति अतएव सम्प्रदायविदोऽकुण्ठितां शक्तिं वेदस्य दर्शयन्ति।

3 धर्मं जिज्ञासमानानां प्रमाणं परमं श्रुतिः। (मनुस्मृति– 2/13)

4 सर्वं विदुर्वेदो वेदे सर्वं प्रतिष्ठितम्।
वेदे हि निष्ठा सर्वस्य यद्यस्ति च नास्ति चं (महाभारत, शान्ति पर्व– 270/43)

भी सामाजीकरण के माध्यम से ही होता है। सामाजीकरण के माध्यम से ही वह संस्कृति को आत्मसात् करता है। सामाजीकरण की प्रक्रिया मनुष्य को संस्कृति के भौतिक एवं प्राकृतिक रूपों से परिचय कराती है तथा व्यक्ति को सामाजिक रूप से क्रियाशील बनाती है। इसी सामाजीकरण की अवधारणा को समझकर हमारे वैदिक ऋषियों के वैदिक मन्त्रों के माध्यम से समाज के समक्ष जो प्रस्तुतीकरण किया है वे सामाजीकरण के उन्नयन में अहम् भूमिका का निर्वाहक ही है।

वैदिक मन्त्रों के अध्ययन से पता चलता है कि प्रत्येक देवता जिनकी स्तुति की गई है उनमें कहीं न कहीं सामाजीकरण के उन्नायक तत्त्व निहित ही हैं। इनमें से विष्णु, अग्नि, पूषन, सूर्य, पुरुष, हिरण्यगर्भ, वाक्, वरूण, उषस् आदि प्रमुख हैं।

विष्णु शब्द विष् धातु से बना है जिसका अर्थ व्यापनशीलता है। विष्णु को त्रिविक्रम अर्थात् तीनों लोकों में किरण फैलाने वाला माना गया है। ऋग्वेद मे इनको तीन पग में ब्रह्माण्ड नापने वाला, सृष्टि की रचना करने वाला बताया गया है तथा इनकी स्तुति में अनेक मन्त्रों का उल्लेख भी है। जिनमें से–

विष्णोर्न क वीर्याणिप्रवेच य पार्थिवानि विममे रजोसि।

यो अस्कंभयदुत्तरं सधस्थे विचक्रमाण स्त्रधोरूगायः।। (ऋग्वेद–1/154/1)

प्रस्तुत मन्त्र विष्णु की व्यक्ति, समाज एवं विश्व के निर्माण करने की क्षमता पर प्रकाश डालता है। व्यक्ति, समाज और विश्व को अहंकार से बचाने के लिये विष्णु ने सूर्य का निर्माण किया, पृथ्वी और नक्षत्रों का निर्माण किया, जो कि सृष्टि का आधारभूत तत्त्व होने के साथ ही व्यापक भी है।

विष्णु के गुणों के वर्णन में कहे गये–

प्रतद्विष्णुः स्तवते वीर्येण मृगो न भीम कुंचरो गिरिष्ठाः।

यस्योरूप त्रिषु विक्रमणष्वधिक्षियन्ति भुवनानि विश्वा।। (ऋग्वेद–1/154/1)

प्रस्तुत मन्त्र में विष्णु के तीन पगों में सम्पूर्ण लोकों की स्थिति का वर्णन है, तथा इसमें विष्णु के वीरतापूर्वक किये गये कार्यों की स्तुति के साथ ही उनके द्वारा लोक आपदाओं का विनाशक भी बताया गया है।

विष्णु के व्यक्तित्व वर्णन में कहे गये–

प्र विष्णवे शुषमेतु मन्यं गिरिक्षितं ऊरूगायाच वृष्णे।

य इदं दीर्घं प्रयेतं सधस्थम् एको विममे त्रिभिरित्पदेभिः।। (ऋग्वेद–1/154/3)

प्रस्तुत मन्त्र में विष्णु को व्यक्ति, समाज, एवं लोक की कामनाओं, आकांक्षाओं को पूर्ण करने वाले शक्तिकोश के रूप में, नियम बन्धन से मुक्त, विराट रूप में प्रस्तुत किया गया है, क्योंकि नियम सामाजीकरण के मूल्यों पर जब लोलुप एवं भ्रष्ट आघात पहुंचाने का कारण बनने लगते हैं, तो विष्णु इन नियमों के बन्धन काटकर विराट् डगों से त्रिलोक को मापकर नियमों में सामाजिक न्याय, आर्थिक समन्वय एवं निष्ठा–आस्था

के युगों का आरम्भ कर देते हैं।

विष्णु को विश्व–कल्याण के मूल्यों का धारक, आनन्द के स्त्रोत के रूप में प्रस्तुत करने वाले–

यस्य त्री पर्णा मधुना पदान्य अक्षीयमाणा स्वधय मदन्ति।

य उ त्रिधातु पृथिवीभुत धाय् एको दधार भुवानानि विश्वा।। (ऋग्वेद–1/154/4)

इस मन्त्र में विष्णु को पृथ्वी, ज एवं तेज से युक्त तथा भौतिक सम्पन्नताओं का धारक, जीवन को मधुर एवं सरस बनाने वाला बताया गया है।

विष्णु को वास्तविक लोक–बन्धु के रूप में प्रस्तुत करने वाले–

तदस्य प्रियमभि पाथो नरो यत्र देवयवा भदन्ति।

उरूक्रमस्य स हि बन्धुरित्या विष्णोः पदे परमे मध्व उत्स।। (ऋग्वेद–1/154/5)

इस मन्त्र में विष्णु को दीनबन्धु, विपत्तियों का नाश कर देने वाला, परम पराक्रमी तथा उनके लोक में निवास करने वाले नागरिकों को आस्थावान, सुखी, तृप्त एवं सरस जीवन से युक्त बताया गया है। अतः सभी को विष्णु के लोक में ही निवास करने हेतु मंगलकामना–

ता वां वास्तून्युश्मसि गम्ध्ये यत्र गावो भूरिशृङ् गा अय स।

अत्राह तदुरूगायस्य वृष्ण परमं पदमव भाति भूरि।। (ऋग्वेद–1/154/6)

करने हेतु प्रस्तुत मन्त्र में विष्णु के तीनों लोकों को स्तवनीय वन्दनीय, प्रकाश एवं सरसता की अनन्तता से युक्त, महान् व्यक्तित्व के वास स्थान का वर्णन करते हुए उन्हें दीनोद्धारक, विपत्तिभंजन तथा सर्वोत्थान की लोकशक्ति आदि गुणों से युक्त बताया गया है।

ऋग्वेद के छठे मण्डल में पूषन् का आठ सूक्तों में स्तवन किया गया है। जिसमें उन्हें पोषणकर्ता, चराचर का स्वामी एवं पथ–संरक्षक बताया गया है तथा त्यागियों का पुत्र 'विमुचीनपात' कहा गया है। इसके अतिरिक्त–

वयमु त्वा पथस्पते रथं न वाजेसायते।

धिये पूषन्नयुजमहि।।

(ऋग्वेद–6/1)

उपर्युक्त मन्त्र में सम्पन्नता, समृद्धि एवं ऐश्वर्य के कर्म–मार्गों के चयन का श्रेय पूषन् को देते हुए पोषण को ही पथों, साधनाओं को इनका अन्तिम लक्ष्य बताया गया है और समाजवाद, लोकतन्त्र, राजतन्त्र, शासनतन्त्र आदि को पोषणमूलक विचार–पद्धति का चयन करने को कहा गया है। इसमें पोषण को चयन का दायित्व समर्पित कर इस मन्त्र में सामाजीकरण की आधारभूमि प्रस्तुत कर दी गई है और साथ ही पथ की बाधाओं, चोर, तस्कर आदि से रक्षा की भी प्रार्थना पोषणमूलक मूल तत्व से की गई है। बुद्धि एवं कर्म को सफलता से पोषण, समृद्धि, सम्पन्नता, ऐश्वर्य एवं उत्थान से संयोजित करने की इस प्रार्थना में सामाजीकरण की मंगल कामना निहित है। जो कि वर्तमान समाजशास्त्रियों को सिद्धान्त सापेक्षता के स्थान पर पोषण सापेक्ष

चिन्तन–मनन सीखने का निमंत्रण है। इसी प्रकार पूषा को–

अभि नी नर्यम् वसु वीरं प्रयतदक्षिणं वामं गृहपतिं नय।। .(ऋग्वेद–6/2)

प्रस्तुत मन्त्र में दारिद्रय का दमनकर्ता, भ्रष्टाचार से मुक्त धन की शुद्धता, शिष्ट वित्तीय विकास का उन्नायक घोषित किया गया है। प्रस्तुत मन्त्र में नर्यम् अर्थात् जनकल्याण की प्राचीन शुभकामना घोषी शब्द तथा 'प्रयत्' प्रदत्त करने वाला भाव धन की समाजवैज्ञानिक दृष्टि प्रस्तुत करता है।

अदित्सन्तं चिदाघृणे पूषन्दानाय चोदय।

पणेश्चिदि्व भ्रदा मनः।।

.(ऋग्वेद–6/3)

प्रस्तुत मन्त्र में सूदखोर एवं कंजूस के जखोरेबाजी, चोरबजारी के तस्कर एवं करापवचक के हृदय परिवर्तन की कोम राष्ट्रिय प्रार्थना पूषन से मार्मिक लय की किया गया है तथा उन्हें वित्तीय दुष्टताओं को राष्ट्रीय जीवनधारा में जोड़ने के लिये संवेदना, कोमलता के सामाजिक मूल्यों के लिये उनमें आस्था, निष्ठा एवं विश्वास की मंगलकामना अभिव्यक्त की गई है जो कि राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में वित्तीय शुद्धता एवं भ्रष्टाचार का उन्मूलक है।

वि पथोः वाजसातये चिनुद्धि वि मृधो जहि।

साधन्तामुग्र नो धिपः।।

.(ऋग्वेद–6/4)

मन्त्र में सामाजिक विकास, व्यक्ति एवं राष्ट्र की सम्पन्नता, समृद्धि एवं ऐश्वर्य के पथ, सिद्धान्त, सूत्र, अभियान का चयन स्वयं उन्हें करने को कहा गया है जिससे शोषित, दमित, विपन्न, दलित आत्मोत्थान कर सके। जिससे इन जनहितकारी पथों, अभियानों, सिद्धान्तों के व्यावहारिक पक्षों से चोर, हिंसक, छली, प्रवंचक, सफेद पोश हुए हों ओर पथिकों की सुरक्षा तथा लक्ष्य प्राप्ति का मार्ग प्रशस्त हो सके।

परि तृन्धि पणीनामारया हृदया कवे।

अर्थमस्मभ्यं रन्धय।।

.(ऋग्वेद–6/5)

प्रस्तुत मन्त्र में उल्लेख है कि व्यापारी लोभ के दुश्चक्र में संग्रहवृत्ति से करापवंचक, जम्बीरेबाज न हों जो कि वैधानिक आतंक से नहीं अपितु पूषा के मांगलिक प्रताप से ही सम्भव है। ऐसे मौलिक सिद्धान्तों के भव्य प्रभाव से ही सामाजिक मूल्यों का संरक्षण हो सकता है और साथ ही इस मन्त्र में कहा गया है कि– वैधानिक दण्ड से कोई वपार उतना शुभ लाभ से विनियोजित नहीं किया जा सकता, जितना कि सौहार्दीकरण, कोमलता, करूणा, प्रेम, एकता, अखण्डता को वपार की पूंजी के रूप में मान्यता लाभप्रद होगी। इस प्रकार पूषा सर्वांगीण विकास का अप्रतिम नेतृत्वकर्त्ता है एवं अपने व्यक्तितव से सर्वहारा विकास के महान् उद्घोषक भी है।

ऋग्वैदिक सूक्तों में अग्नि का प्रभाव और विस्तार की भूमि का अपना विशिष्ट स्थान है। जिनमें इनकी नेतृत्व शक्ति से सम्पन्नता, यज्ञाहुतियों की स्वीकृति एवं ग्रहण, तेज एवं प्रकाश का अधिष्ठाता तीन विशेषताओं

का वर्णन प्राप्त है।

प्र तव्यसी न वयसीं धीतिमग्नये वचोमति सहसः स न वे भरे।

अपां न पाथो वसुभिः सहप्रियो होता पृथिव्यां न्यसीददृत्वियः।। (ऋग्वेद–1/143/1)

प्रस्तुत मन्त्र में अग्नि को प्रेम, सौहार्द, सुख, समृद्धि एवं ऐश्वर्य की सद्भावनाओं का स्रोत बताया गया है तथा इसमें अग्नि के आर्द्रता, मृदुता, स्निग्धता, समृद्धि, सम्पदा, ऐश्वर्य आदि सामाजिक भूमिकाओं का आकलन भी किया गया है।

स जायमानः परमे व्योम्याविरग्निरभबम्या तरिश्वने।

अस्य कृत्वा सनिधनस्य यज्मना प्रधावा शोधिः पृथिवी अरचियतृ।। (ऋग्वेद–1/143/2)

इस मन्त्र में अग्नि को अंधकार का भेदक, प्रेम, एकता, त्याग, बलिदान के महान् कर्त्तव्यों को पृथ्वी पर ही नहीं अपितु आकाश तक प्रकाशित करने वाला प्रज्वाल बताया गया है।

अस्य त्वेषा अजरा अस्य मानवः सुसदृशः सुप्रतीकस्य सुद्युतः।

भात्वक्षसी अत्यक्तुर्न सिन्धवोऽग्ने रैजन्ते असस्न्तो अजरा।।

(ऋग्वेद–1/143/3)

प्रस्तुत मन्त्र में अग्नि के व्यक्तित्व का वर्णन करते हुए उसे समाज–सेवा के विभिन्न नैसर्गिक कार्यक्रमों में, प्रकाश, ऊर्जा, गति के अजर, अमर, शाश्वत, सुन्दर, सत्य एवं विश्राम रहित सेवा वाला बताया गया है।

इस प्रकार से समाजीकरण के उन्नयन में वैदिक देवताओं की तथा वैदिक मन्त्रों की अहम् भूमिका रही है, जिनका अनुकरण कर वर्तमान समाज में व्याप्त विसंगतियों को दूर किया जा सकता है।